This question paper contains **4+2** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5626**

Unique Paper Code : **205455** **E**

Name of the Paper : **Aadhunik Kavya**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए । 15

अथवा

नई कविता की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए ।

2. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

(क) ''क्या 'यशोधरा' नारी स्वाभिमान की गाथा है ?''

अथवा

यशोधरा की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

(ख) महाप्रस्थान में अमानवीय व्यवस्था की अभिव्यक्ति है । स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

''युधिष्ठिर करुणा, विवेक और धर्म की प्रतिमूर्ति हैं ।'' 'महाप्रस्थान' के आधार पर युधिष्ठिर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

P.T.O.

(ग) 'कुरुक्षेत्र' के आधार पर भीष्म के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए ।

अथवा

'कुरुक्षेत्र' के युद्धदर्शन पर विचार कीजिए ।

3. किसी **एक** काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(क) व्यक्ति के पुरुषार्थ और संकल्प का

तब कोई अर्थ नहीं ।

इस समस्त मेदिनी को तब अपनी मुट्ठियों में कस लेने का भी

कोई अर्थ नहीं ।

अथवा

राज्य के नहीं

धर्म के नियमों पर समाज आधारित है ।

राज्य पर अंकुश बने रहने के लिए

धर्म और विचार को

स्वतन्त्र रहने दो पार्थ !

अन्यथा यह समाज

रहने के योग्य नहीं रह जाएगा ।

(ख) सखि, प्रियतम हैं वन में !

किन्तु कौन इस मन में !

दिव्य-मूर्ति वंचित भले चर्म-चक्षु गल जाए,

प्रलय ! पिघलकर प्रिय न जो प्राणों में ढल जाए,

जैसे गन्ध पवन में ।

सखि, प्रियतम हैं वन में !

अथवा

देख कराल काल-सा जिसको काँप उठे सब भय से,

गिरे प्रतिद्वन्द्वी नन्दार्जुन, नागदत्त जिस भय से

वह तुरंग पालित कुरंग-सा नत हो गया विनय से

क्यों न गूँजती रंगभूमि फिर उनके जय जय जय से !

निकला वहाँ कौन उन जैसा प्रबल-पराक्रमकारी !

आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी !

(ग) हाय रे मानव, नियति का दास

हाय रे मनुपुत्र, अपना आप ही उपहास !

प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत,

सिन्धु से आकाश तक सबको किए भयभीत !

सृष्टि को निज बुद्धि से करता हुआ परिमेय,

चरित परमाणु की सत्ता असीम, अजेय !

अथवा

रसवती भू के मनुज का श्रेय,
यह नहीं विज्ञान, विद्या-बुद्धि यह आग्नेय !
विश्व-दाहक, मृत्यु-वाहक, सृष्टि का संताप,
भ्रान्त पथ पर अन्ध बढ़ते ज्ञान का अभिशाप !
भ्रमित प्रज्ञा का कुतुक यह इन्द्रजाल विचित्र,
श्रेय मानव के न, आविष्कार ये अपवित्र !

4. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 8+8+8=24

(क) भारतेन्दु की कविता 'प्रेम की महिमा' का भाव स्पष्ट कीजिए ।

(ख) प्रसाद की 'आँसू' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए ।

(ग) निराला की 'मैं अकेला' कविता की मूल संवेदना पर विचार कीजिए ।

(घ) पंत की 'मौन निमंत्रण' कविता का भाव-सौन्दर्य लिखिए ।

(ङ) महादेवी की कविता 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' का कथ्य लिखिए ।

(च) अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' के शिल्प-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए ।

(छ) वीरेन्द्र मिश्र के गीत नवगीत परपंरा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, स्पष्ट कीजिए ।

5. किन्हीं **दो** काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7+7=14

(क) तीन बुलाए तेरह आवैं,
निज-निज विपता रोइ सुनावैं ।
आँख फूटी भरा न पेट,
क्यों सखि । साजन ? नहिं ग्रेजुएट ।

(ख) जो घनीभूत पीड़ा थी

मस्तक में स्मृति-सी छायी

दुर्दिन में आँसू बनकर

वह आज बरसने आयी ।

मेरे क्रन्दन में बजती

क्या वीणा-जो सुनते हो

धागों से इन आँसू के

निज करुणा-पट बुनते हो ।

(ग) चढ़ रही थी धूप,

गर्मियों के दिन,

दिवा का तमतमाता रूप;

उठी झुलसाती हुई लू,

रुई ज्यों जलती हुई भू,

गर्द चिनगी छा गई,

प्राय: हुई दुपहर,

वह तोड़ती पत्थर ।

(घ) हम निहारते रूप
काँच के पीछे
हाँप रही है मछली
रूप-तृषा भी
(और काँच के पीछे)
है जिजीविषा ।

(ङ) देख वसुधा का यौवन भार
गूँज उठता है जब मधुमास,
विधुर उर के-से मृदु उद्‌गार
कुसुम जन खुल पड़ते सोच्छ्वास
न जाने, सौरभ के मिस कौन
सँदेशा, मुझे भेजता मौन !